An I Can Read Book®

LEVEL 3 Grades 2-4

Millicent Selsam, Arnold Lobel

GREG'S MICROSCOPE

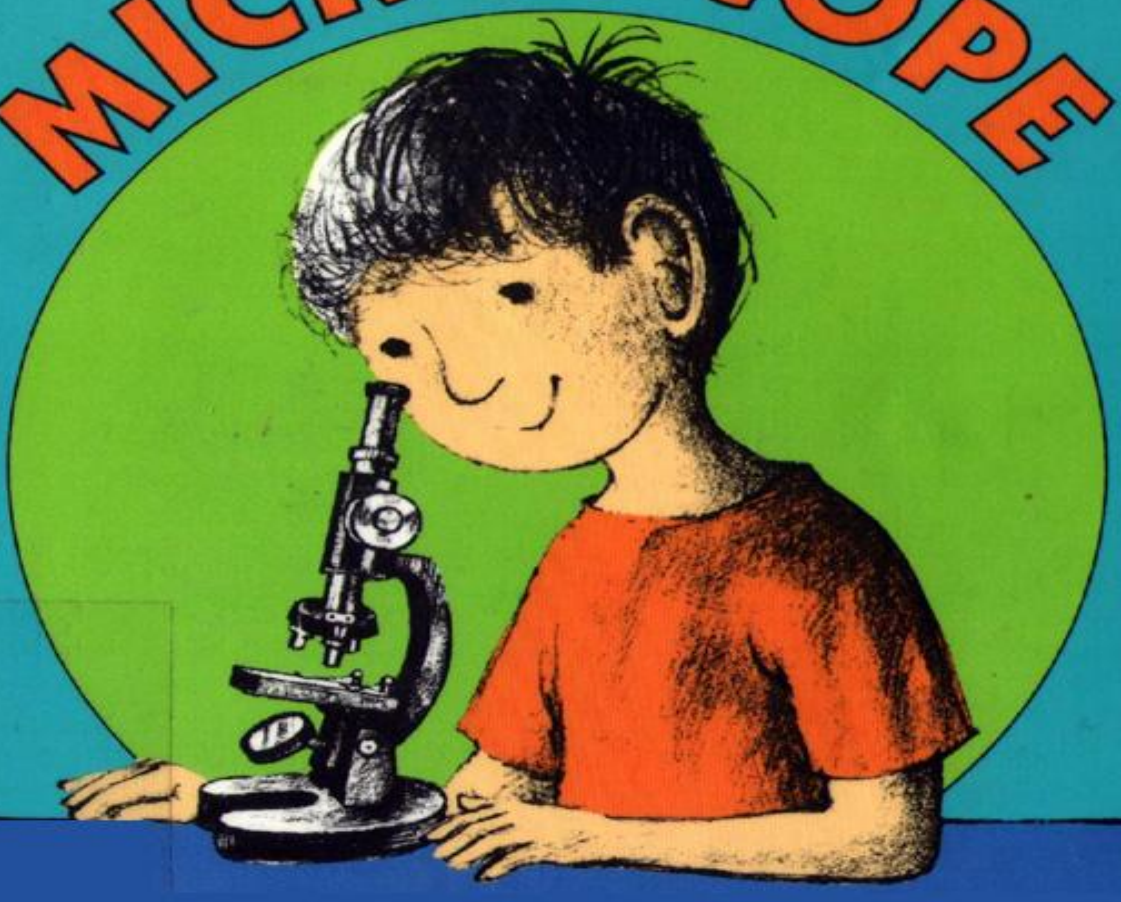

ग्रेग का माइक्रोस्कोप

मिलीसेंट सेलसम, चित्र: अर्नाल्ड लोबल हिंदी : विदूषक

ग्रेग का माइक्रोस्कोप

मिलीसेंट सेलसम, चित्र: अर्नाल्ड लोबल

हिंदी : विदूषक

ग्रेग को एक सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) चाहिए.

“पिताजी,” उसने कहा,

“कृपा, मेरे लिए एक माइक्रोस्कोप खरीदें.”

“क्यों?” पिताजी ने पूछा.

“जिससे मैं छोटी-छोटी चीज़ें देख सकूं,” ग्रेग ने कहा.

“क्या तुम माइक्रोस्कोप के बिना, छोटी चीज़ें नहीं देख सकते?” पिताजी ने पूछा.

“इस बिंदु को देखो.

वो बहुत छोटा है.

इस चींटी को देखो.

वो भी बहुत छोटी है.

तुम आखिर क्या देखना चाहते हो?”

“मेरे दोस्त बिली के पास

एक माइक्रोस्कोप है.

वो एक डिब्बे में आया था.

उसके साथ ग्लास-स्लाइड्स भी थे.

वो मकड़ी के पैरों के बाल देख सकता है.

वो चिड़ियों के पंखों के छोटे-छोटे

हुक देख सकता है.

वे बहुत छोटे होते हैं.

पर माइक्रोस्कोप के नीचे वे बड़े दिखते हैं.

मैं भी वो सब चीज़ें देखना चाहता हूँ.”

“तुम बिली के माइक्रोस्कोप में से क्यों नहीं देख सकते?” ग्रेग के पिताजी ने पूछा.

“बिली उसे इस्तेमाल कर रहा है. मुझे खुद का अपना माइक्रोस्कोप चाहिए.” ग्रेग ने कहा.

“मैं उसके बारे में सोचूंगा,” ग्रेग के पिताजी ने कहा.

“माइक्रोस्कोप बहुत महंगे होते हैं.”

“बिली के पिताजी ने उसे सस्ते में खरीदा था.”

“अच्छा, मैं उनसे बात करूंगा,” ग्रेग के पिताजी ने कहा.

ग्रेग के पिताजी ने बिली के पिता से बात की.

फिर उन्होंने माइक्रोस्कोप ढूंढना शुरू किया.

उसके लिए वो खिलोनों की दुकानों में गए.

वो बड़े डिपार्टमेंट स्टोर्स में गए.

फिर वो एक ऐसी जगह गए जहाँ इस्तेमाल किए,

पुराने माइक्रोस्कोप बिकते थे.

वो घर पर एक बड़ा डिब्बा लेकर आए.

उन्होंने ग्रेग को बुलाया.

ग्रेग दौड़ा-दौड़ा आया.

“इस डिब्बे में क्या है?” उसने पूछा.

“खोलकर देखो,” पिताजी ने कहा.

ग्रेग ने डिब्बा खोला.

“वाह!” उसने कहा. “क्या कमाल का माइक्रोस्कोप है.”

“क्या माइक्रोस्कोप बहुत महंगा था?” ग्रेग ने पूछा.

“नहीं, बहुत महंगा नहीं था,” पिताजी ने कहा.

ग्रेग के पिताजी ने माइक्रोस्कोप को खिड़की के सामने वाली मेज़ पर रख दिया.

“इसमें से देखो,” उन्होंने कहा.

ग्रेग बैठ गया.

उसने माइक्रोस्कोप में से देखा.

“मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है.

अन्दर सिर्फ अँधेरा है,” उसने कहा.

“नीचा का आईना घुमाओ जिससे कि जो तुम देख रहे हो,

उस पर प्रकाश पड़े,” पिताजी ने कहा.

ग्रेग ने आईने को थोड़ा सा घुमाया.

“अब मुझे दिख रहा है,” उसने कहा.

“बहुत अच्छा,” उसके पिताजी ने कहा.

“उससे तुम छोटी-छोटी चीज़ों को देखो.”

ग्रेग शांत बैठा रहा.

“क्या आप मेरे लिए कुछ स्लाइड्स भी लाये हैं?”

“नहीं, ग्रेग,” पिताजी ने कहा.

“तुम छोटी-छोटी चीज़ें खुद ढूँढो, स्लाइड्स खुद बनाओ.”

“मैं किस चीज़ को देखूं?” ग्रेग ने पूछा.

“छोटी चीज़ क्या होती है?”

ग्रेग किचन में दौड़ा गया.

“माँ,” ग्रेग ने कहा, “मुझे देखने के लिए कुछ छोटी चीज़ें दो.”

माँ हाथ में नमकदानी उठाए थीं.

“ज़रा नमक को देखो,” उन्होंने कहा.

ग्रेग दौड़ कर एक ग्लास स्लाइड लेकर आया.

उसने थोड़ा सा नमक स्लाइड पर रखा.

“रुको,” ग्रेग के पिताजी ने कहा.

“मैं तुम्हें माइक्रोस्कोप का सही इस्तेमाल का तरीका बताऊँगा.”

उन्होंने ग्रेग को माइक्रोस्कोप की घुंडी (नॉब) घुमाना सिखाया.

अंत में ग्रेग को नमक दिखा.

“यहाँ तो नमक के बड़े-बड़े ढेले दिख रहे हैं,” ग्रेग ने कहा.

“हाँ, उसके पिताजी ने कहा.

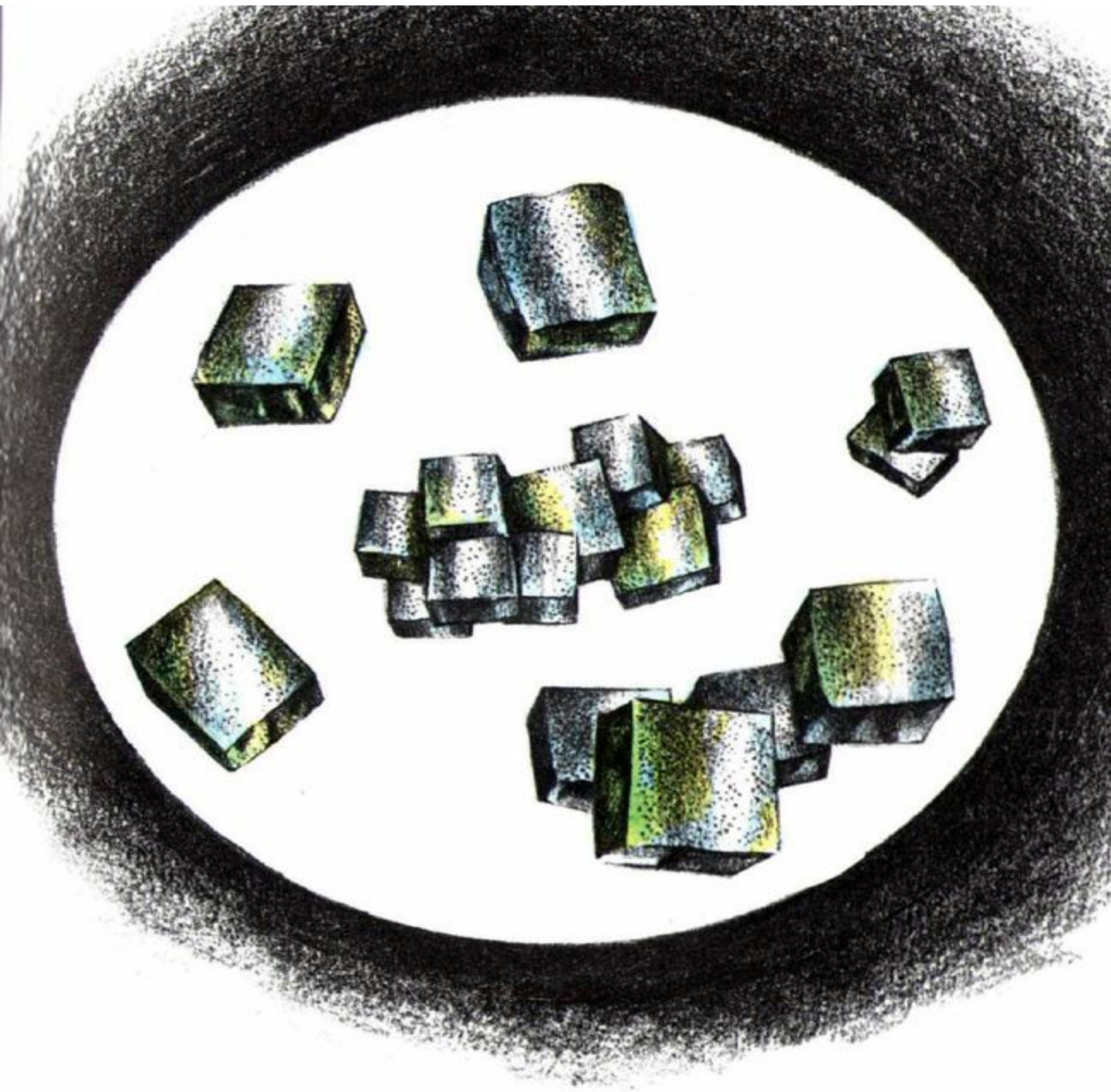

“इसमें नमक अपने असली आकार से,

सौ-गुना ज्यादा बड़ा दिखता है.”

“सौ-गुना बड़ा!” ग्रेग ने कहा.

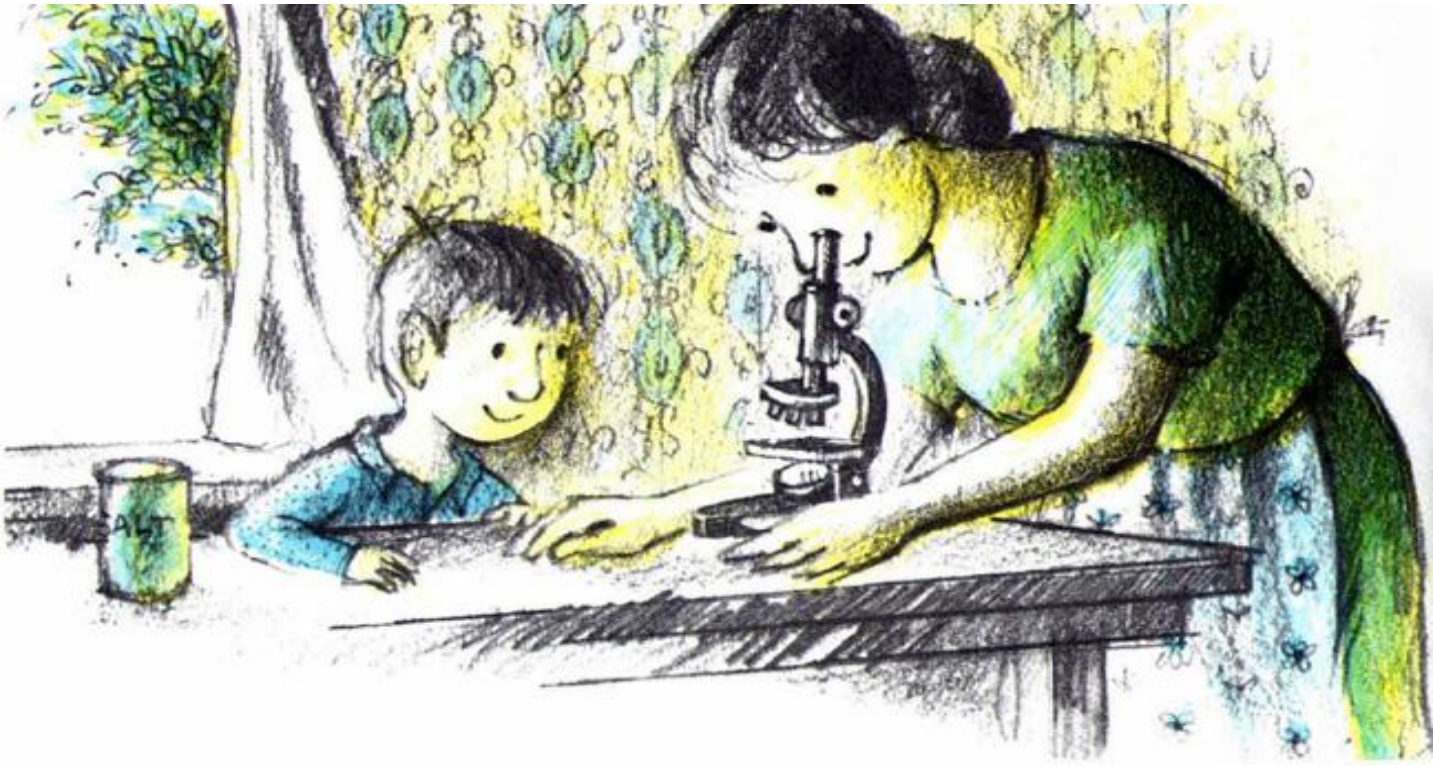

इतनी देर में वहां ग्रेग की माँ आ गईं.

“ज़रा मैं भी नमक को देखूं,” उन्होंने कहा.

उन्होंने भी माइक्रोस्कोप में से नमक को देखा.

“बाप-रे-बाप, इतने बड़े,” उन्होंने कहा.

“नमक के कण, यहाँ पत्थरों जैसे दिखते हैं.

ग्रेग, किचन में चलो. वहां हम और छोटी चीज़ें देखेंगे.”

ग्रेग तुरंत किचन में नहीं गया.

वो बस माइक्रोस्कोप में से नमक को देखता रहा.

“इसमें कुछ पानी डालो,” उसके पिता ने कहा.

फिर ग्रेग पानी लाया. उसने नमक पर एक बूँद पानी डाला.

उसने माइक्रोस्कोप से दुबारा देखा.

“पिताजी,” ग्रेग चिल्लाया, “नमक धीरे-धीरे छोटा

और छोटा हो रहा है. वो ख़त्म हो रहा है.

अब वो लुप्त हो गया!”

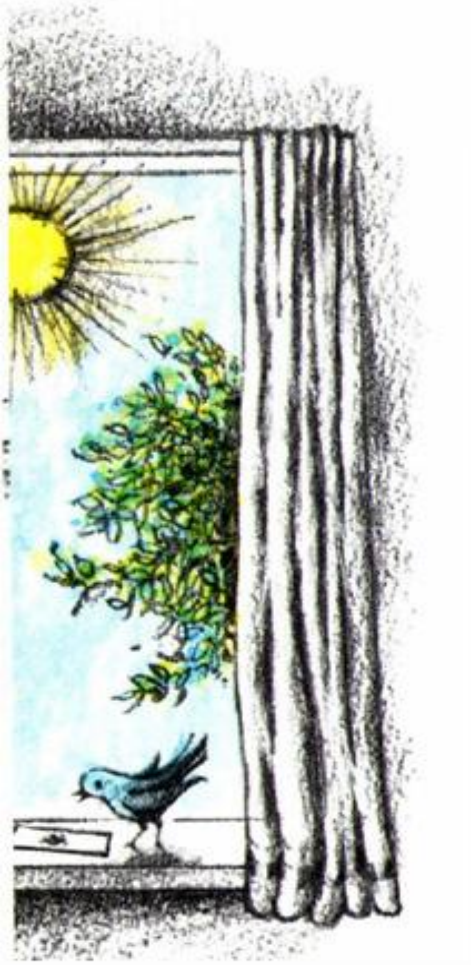

“मेरा नमक गायब हो गया!” ग्रेग ने कहा.

“वो कहाँ गया?”

“वो पानी में चला गया,” पिताजी ने कहा.

“स्लाइड को धूप में रखा. पानी सूखने दो.”

ग्रेग ने स्लाइड को धूप में रखा,

फिर वो किचन में गया.

“चलो, अब हम चीनी को माइक्रोस्कोप

में से देखेंगे,” उसने माँ से कहा.

ग्रेग की माँ ने उसे कुछ चीनी दी.

ग्रेग ने उसे एक स्लाइड पर रखा.

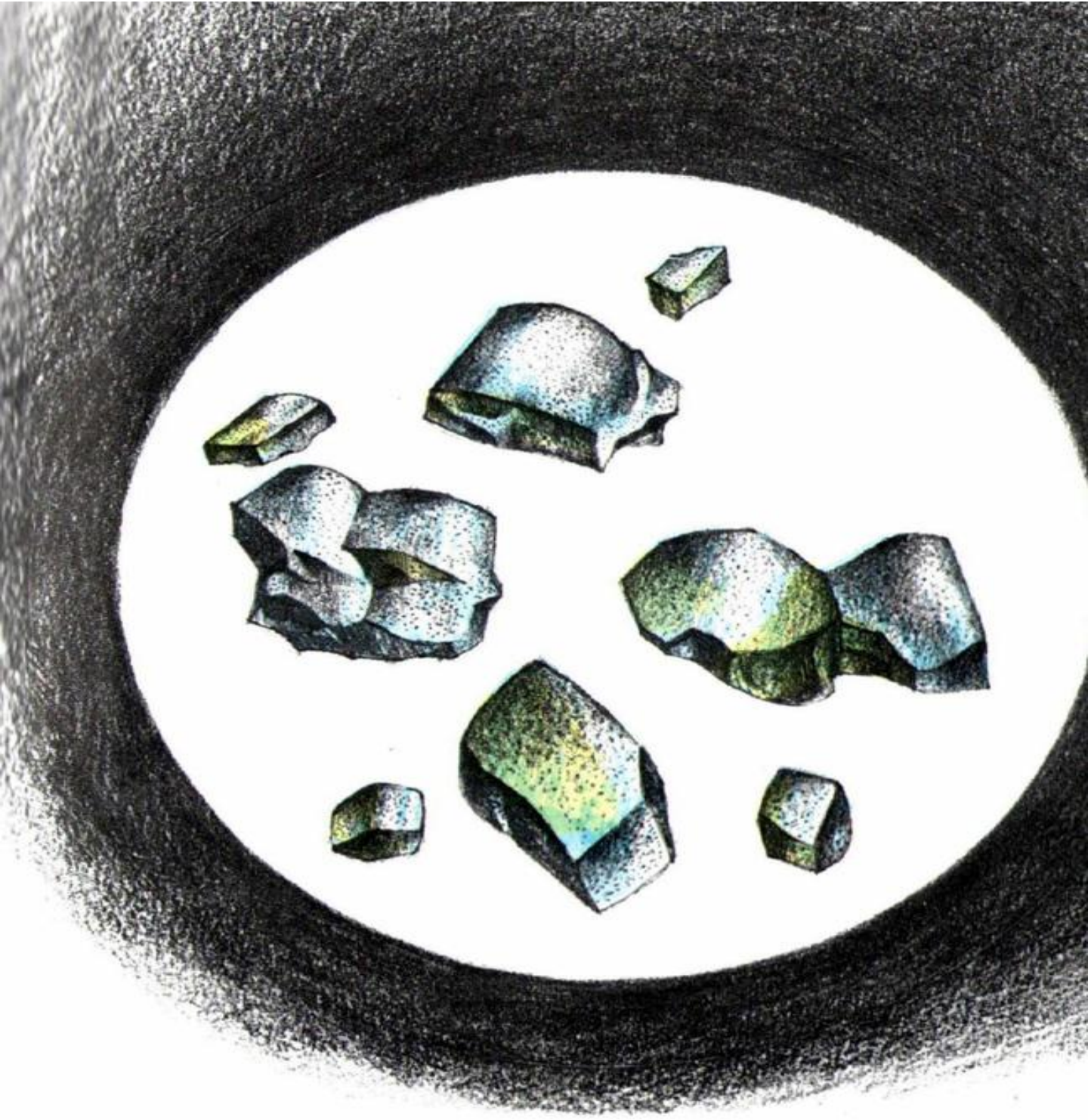

फिर वो वापिस गया,

स्लाइड को माइक्रोस्कोप में से देखने.

चीनी के दाने भी, बड़े-बड़े ढेले दिखते हैं.

पर चीनी के दाने नमक के ढेलों जैसे एकसार नहीं हैं,"

उसने कहा.

"थोड़ा पानी डालो," उसके पिताजी ने कहा.

"नहीं," ग्रेग ने कहा. "पानी डालने से नमक खो गया था,

अब मैं चीनी नहीं खोना चाहता."

"ज़रा देखो, क्या नमक वाली स्लाइड सूख गई," पिताजी

ने कहा.

ग्रेग ने देखा.

“पिताजी,” उसने कहा.

“पानी में से नमक बाहर निकल आया है.

नमक, स्लाइड पर दुबारा दिखाई दे रहा है.

पर अब वो कुछ अलग लग रहा है.”

“पानी में क्रिस्टल (स्फटिक) अच्छे बनते हैं,”

पिताजी ने कहा.

“क्रिस्टल्स!” ग्रेग ने कहा.

“वो क्या होते हैं?”

“उन्हें गौर से देखो,” पिताजी ने कहा.

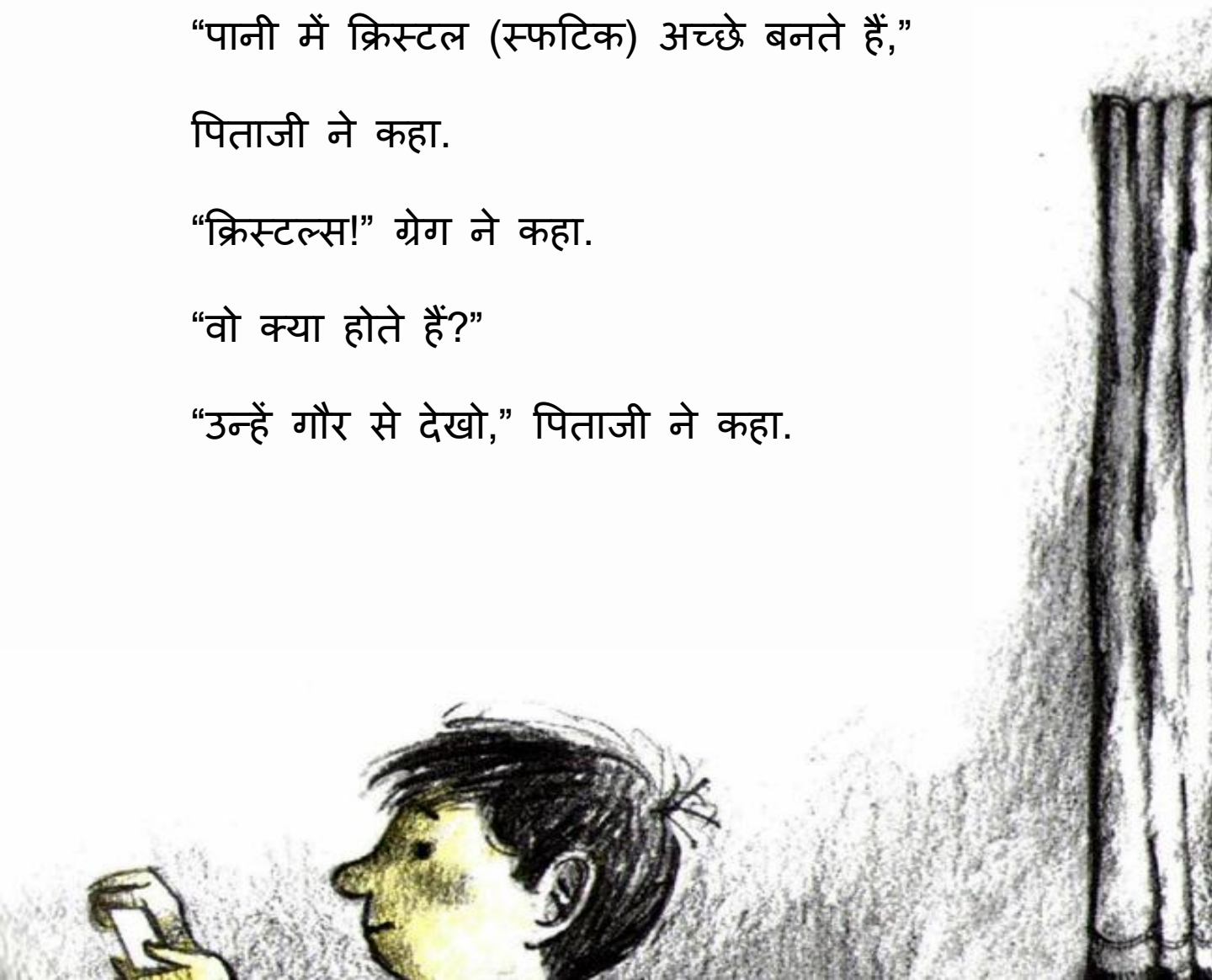

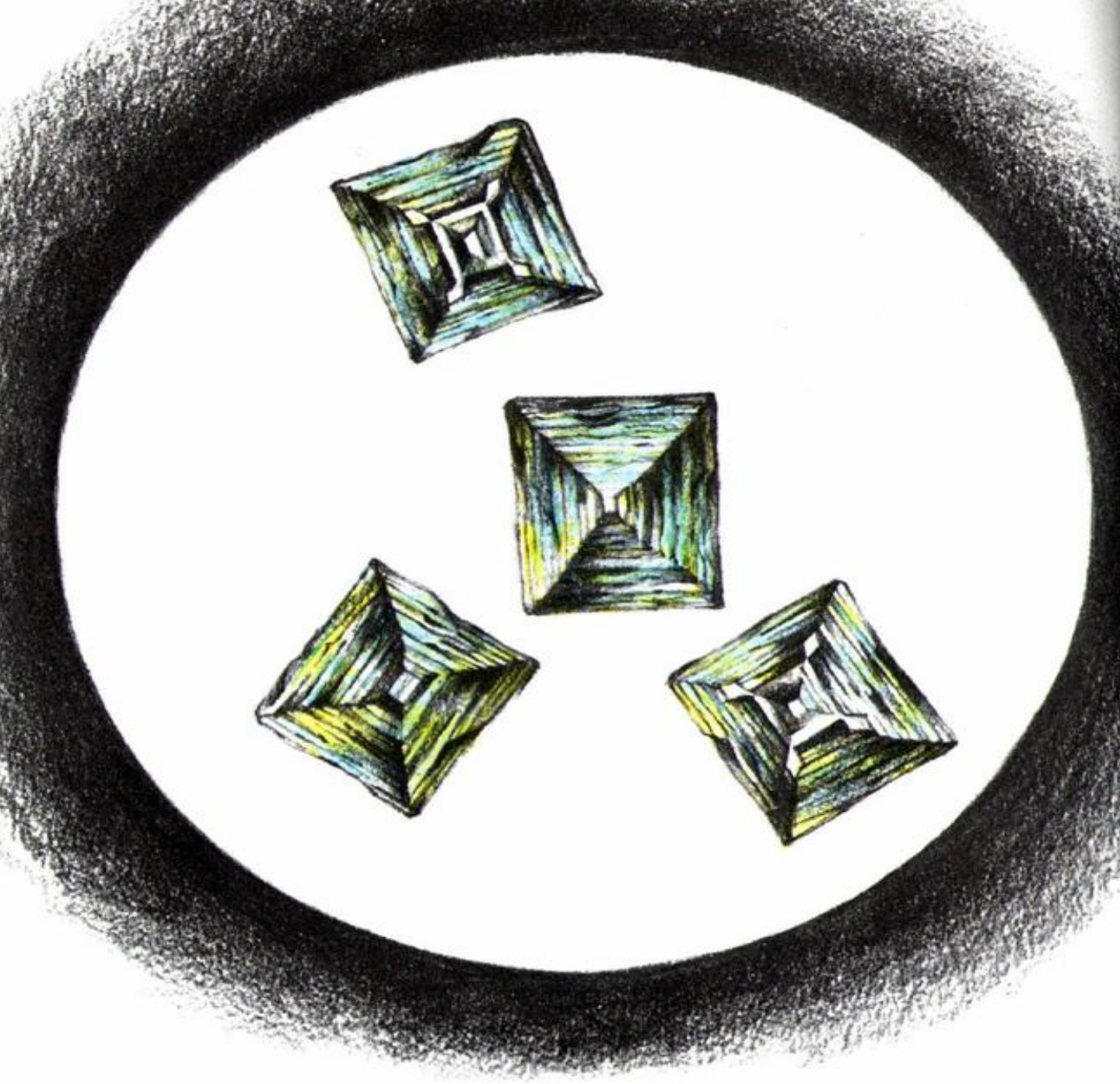

ग्रेग ने स्लाइड को माइक्रोस्कोप में वापिस रखा.

“अरे वाह!” उसने कहा.

“नमक अब कांच के ढेलों जैसा दिखता है.”

“ज़रा मैं भी देखूं,” पिताजी ने कहा,

“माँ को भी बुलाओ.”

ग्रेग, माँ को बुलाने गया.

माँ ने भी माइक्रोस्कोप में से देखा.

“वो बिल्कुल हीरे जैसे लग रहे हैं,” माँ ने कहा.

“एकदम सही,” ग्रेग के पिता ने कहा.

“नमक और चीनी के हरेक क्रिस्टल के नुकीले कोने हैं,

बिल्कुल हीरे की तरह.”

“क्या सभी क्रिस्टल्स के कोने नुकीले होते हैं?”

ग्रेग ने पूछा.

“हाँ,” पिताजी ने उत्तर दिया.

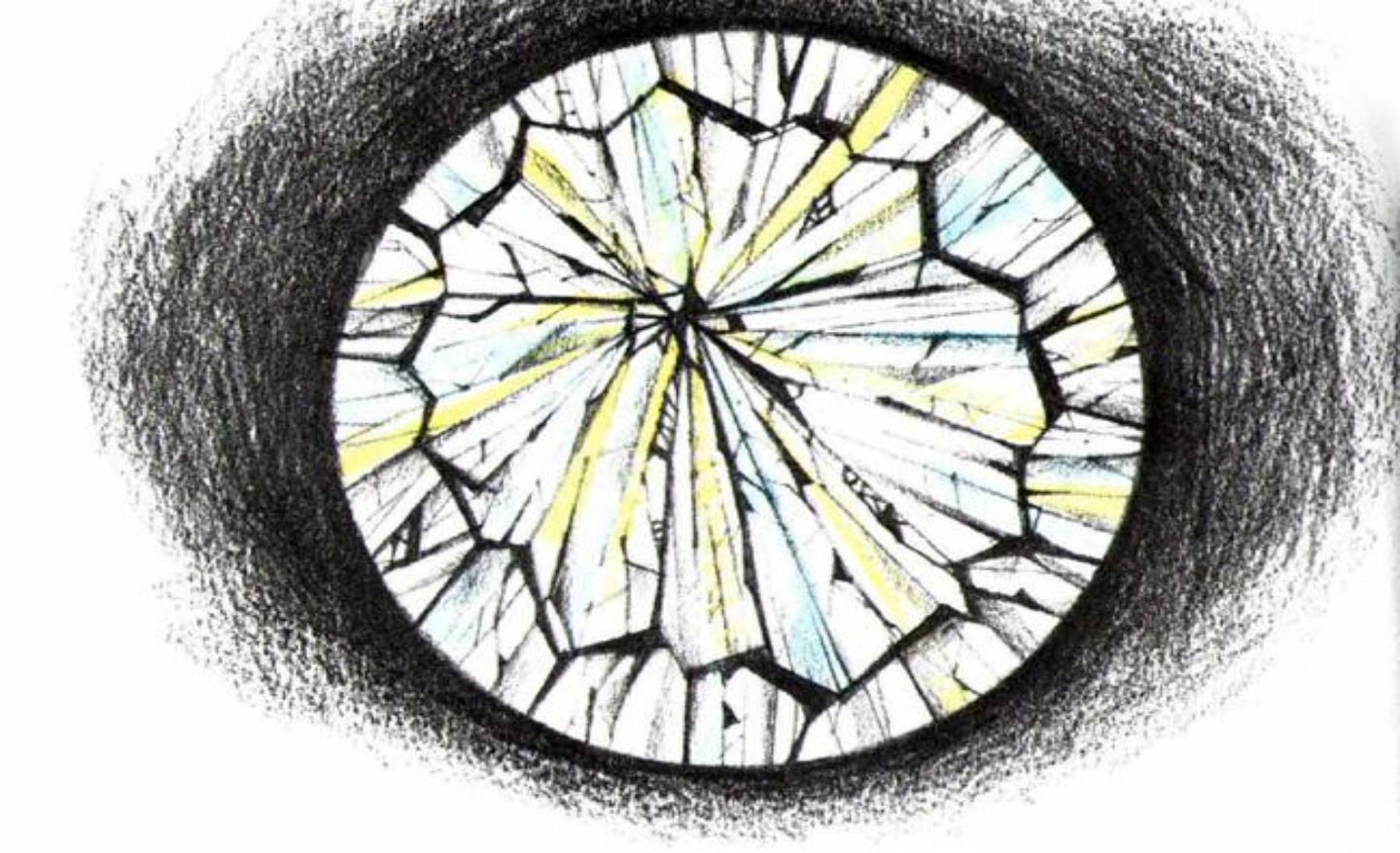

“चलो, चीनी के कुछ अच्छे क्रिस्टल्स देखते हैं,” ग्रेग ने कहा.

उसने चीनी पर कुछ पानी की बूँदें डालीं.

फिर उसने माइक्रोस्कोप में से देखा.

चीनी का हरेक ढेला धीरे-धीरे, छोटा और छोटा होता गया.

“देखो, अब चीनी के दाने गायब हो रहे हैं,” ग्रेग ने कहा.

फिर उसने स्लाइड को धूप में रख दिया.

स्लाइड को सूखने के बाद उसने दुबारा देखा.

चीनी के क्रिस्टल बिल्कुल कांच के फूलों जैसे दिख रहे थे.

“कितने सुन्दर क्रिस्टल्स हैं,” ग्रेग ने कहा.

“अब हम काली मिर्च के पाउडर को देखेंगे.”

उसने काली मिर्च का कुछ पाउडर स्लाइड पर रखा

और उसे देखा.

“इसमें तो कोई क्रिस्टल्स नहीं हैं,” उसने कहा.

“काली मिर्च का पाउडर तो धूल जैसा दिखता है.”

अगले दिन, छुट्टी थी.

ग्रेग का दोस्त बिली उसके घर आया.

“चलो, मेरा नया माइक्रोस्कोप देखो,” ग्रेग ने कहा.

“तुम्हारा माइक्रोस्कोप तो वाकई बढ़िया है,”

बिली ने कहा.

“ज़रा, मुझे कुछ स्लाइड्स देखने को दो.”

“मैंने खुद अपने स्लाइड्स बनाये हैं,” ग्रेग ने कहा.

फिर उसने बिली को नमक और चीनी के स्लाइड्स दिखाए.

बिली ने उन्हें देखा.

“यह क्रिस्टल्स हैं,” ग्रेग ने कहा.

“चीनी और नमक के हर क्रिस्टल के नुकीले कोने होते हैं –

बिल्कुल हीरे की तरह.”

“क्या हर चीज़, क्रिस्टल्स की बनी होती है?’ बिली ने पूछा.

“नहीं,” ग्रेग ने कहा. “काली मिर्च के पाउडर को देखो.”

बिली ने काली मिर्च के पाउडर देखा.

“चलो अब हम और चीज़ें देखते हैं,” उसने कहा.

“क्या हम आटा देखें?

क्या तुमने पहले कभी आटा देखा है?

और मक्खन?

फिर दूध को भी देखें?

चलो एक-एक करके इन सभी चीज़ों को देखते हैं,”

ग्रेग ने कहा.

फिर वो थोड़ा आटा लाया और उसने उसे एक

स्लाइड पर रखा.

“इसमें पानी की एक बूँद डालो,” बिली ने कहा.

“क्या आटा पानी में मिलेगा?” ग्रेग ने पूछा.

“मुझे नहीं पता,” बिली ने उत्तर दिया.

फिर ग्रेग ने आटे में कुछ पानी डाला.

FLOUR
XXX

फिर उसने माइक्रोस्कोप में से देखा.

“नहीं,” उसने कहा.

“आटा, पानी में नहीं घुला.”

“क्या तुम्हारे पास स्लाइड का कवर है?” बिली ने पूछा.

“कवर ग्लास, लगाओ, .”

“क्यों?” ग्रेग ने पूछा.

“क्यूँकि, उससे तुम्हें बेहतर दिखाई देगा,” बिली ने कहा.

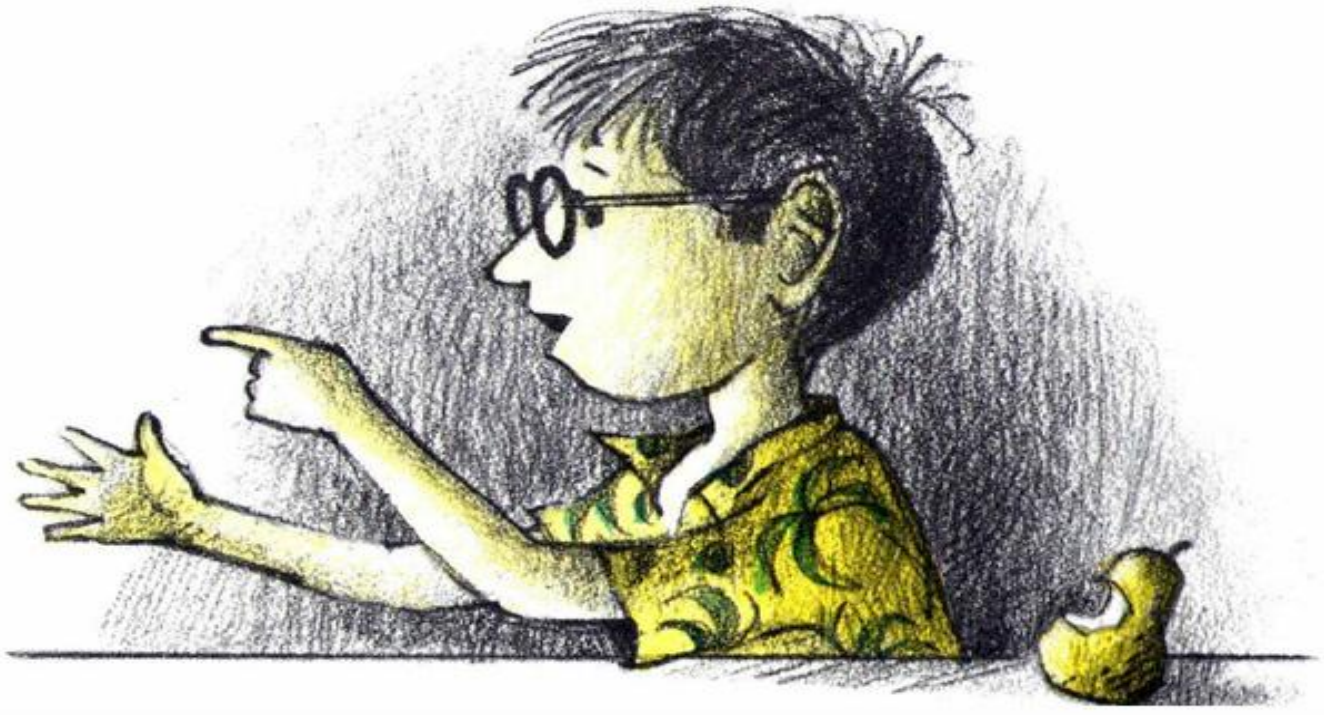

ग्रेग ने स्लाइड पर ग्लास कवर लगाना शुरू किया.

बिली उसे देखता रहा.

“उसे जोर से मत रखना,” उसने कहा.

“क्यों नहीं?” ग्रेग ने पूछा.

“नहीं तो अन्दर बहुत से हवा के बुलबुले चले जायेंगे,”

बिली ने कहा.

“अच्छा होगा! मैं बुलबुलों को देखना चाहता हूँ,” ग्रेग ने कहा.

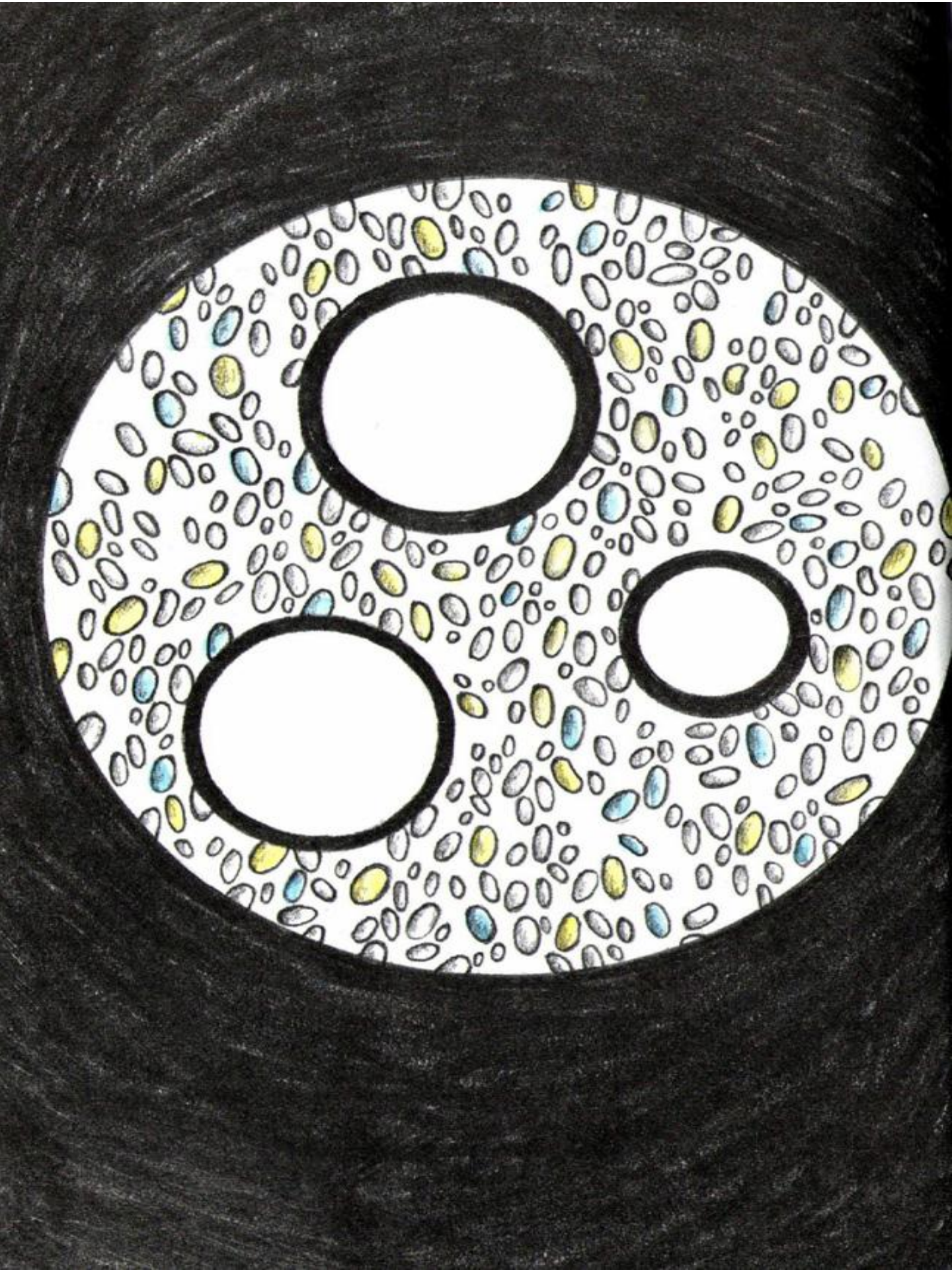

फिर उसने स्लाइड को माइक्रोस्कोप के नीचे देखा.

“वो बड़े-बड़े काले गोले क्या हैं?” ग्रेग ने पूछा.

“हवा के बुलबुले,” बिली ने कहा.

“मुझे वो बहुत अच्छे लगे!” ग्रेग ने कहा.

“आटा कहाँ है?”

“मुझे देखने दो,” बिली ने कहा.

“वो जो साफ़ चीज़ें दिखाई दे रही हैं, वो आटा होंगी.”

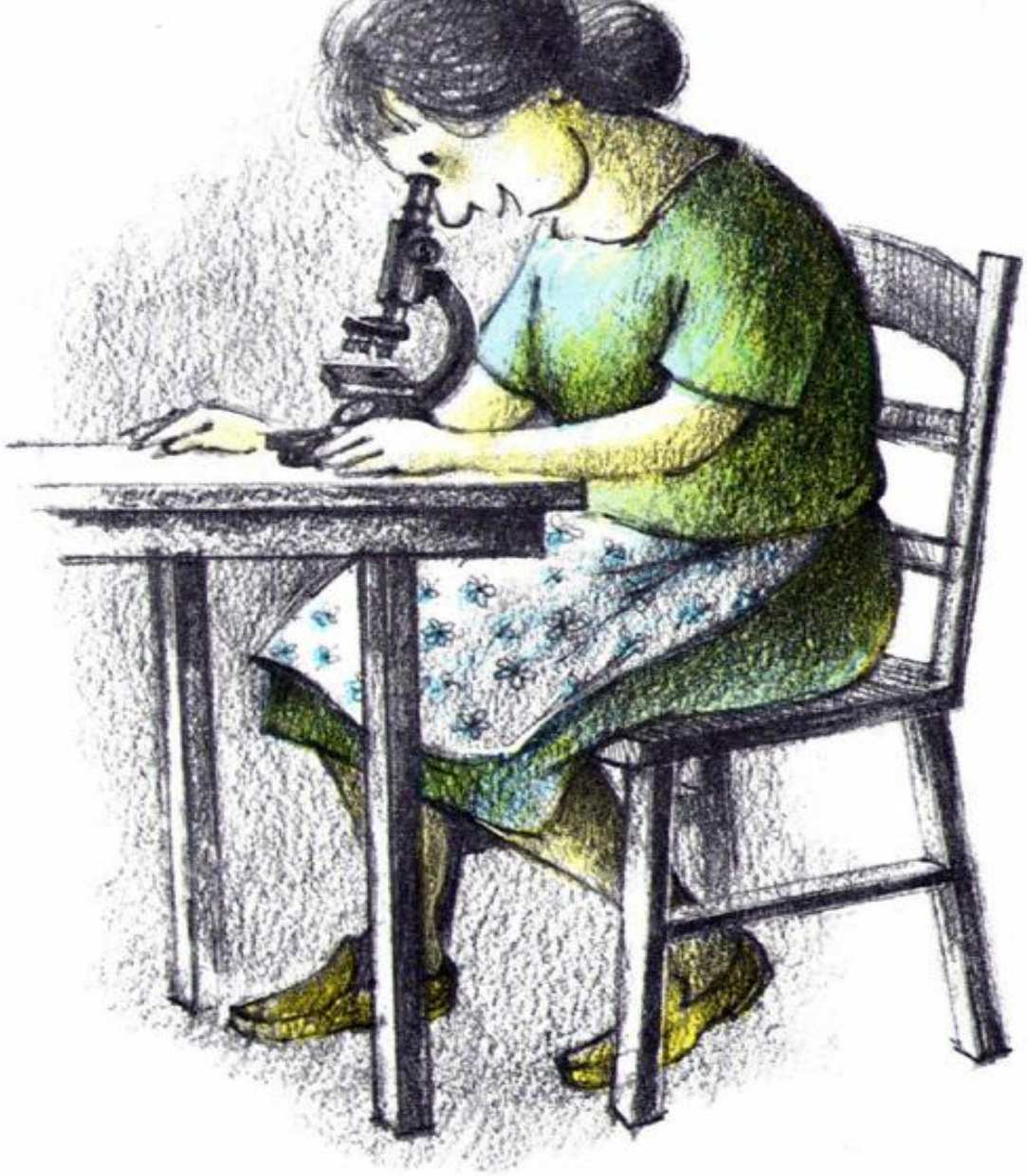

तभी ग्रेग की माँ भी वहां आ गईं.

“आटा?” उन्होंने पूछा.

“ज़रा मैं भी आटे को देखूं. मुझे भी काले छल्ले दिख रहे हैं.”

“वो हवा के बुलबुले हैं,” ग्रेग ने कहा.

“उन बुलबुलों के बीच में आपको जो छोटी साफ़ चीज़ें दिखेंगी, वही आटा है.”

“ग्रेग,” माँ ने पूछा, “तुम्हें इतना सब कैसे पता?”

“बहुत ज्यादा तो नहीं,” ग्रेग ने झेंपते हुए कहा.

फिर उसने बिली की तरफ देखा.

फिर ग्रेग की माँ, सिलाई का काम करने लगीं.

ग्रेग और बिली माइक्रोस्कोप में से अलग-अलग चीज़ें देखते रहे.

उन्होंने मक्खन को देखा.

उन्होंने दूध को देखा.

उन्होंने धूल को देखा.

हर मिनट पर ग्रेग की माँ बच्चों को यह कहते सुनतीं.

“ज़रा, इसे देखो.”

“वाह! ज़रा इसे देखो.”

जब वो माँ के पास आए तो उन्होंने कहा.

“क्या हम धागे को माइक्रोस्कोप में से देख सकते हैं?”

उन्होंने पूछा.

“ज़रूर,” माँ ने कहा.

“लो यह सिलाई का सूती धागा.”

ग्रेग ने धागा लिया.

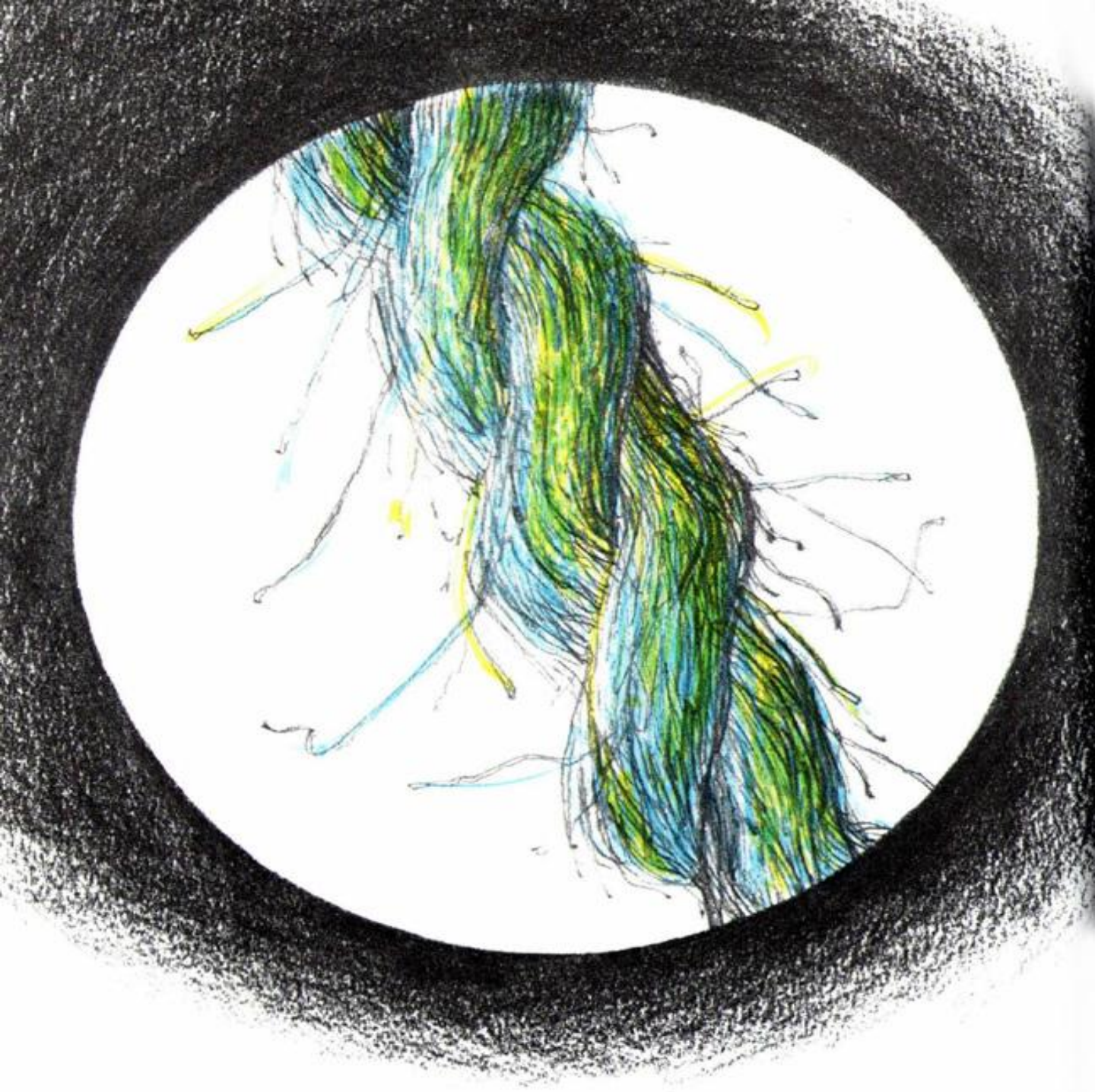

उसने एक स्लाइड बनाया और धागे को देखा.

“यह अभी तक का सबसे अच्छा स्लाइड है,” उसने कहा.

“ज़रा इसे देखो, बिली. माँ, तुम भी देखो.”

ग्रेग की माँ ने देखा.

बिली ने देखा.

सूती धागा असल में बहुत से रेशों को मरोड़कर बना था.

“यह तो बहुत सुन्दर है,” ग्रेग की माँ ने कहा.

“अब ज़रा ऊन को भी देखो.”

फिर ग्रेग ने माइक्रोस्कोप के नीचे एक ऊन का टुकड़ा रखा.

दरअसल ऊन का हर धागा,

बहुत से धागों को मरोड़कर बना था.

“बिली, इधर देखो,” ग्रेग ने कहा.

“ऊन के एक रेशे को देखो. उसके ऊपर शल्क (स्केल्स) हैं,

बिल्कुल मछली के शल्कों की तरह.

बिली ने भी देखा.

“हाँ,” उसने कहा.

“शायद सभी बाल इसी तरह दिखते हों.”

“बाल!” ग्रेग चिल्लाया.

“भला, बाल का ऊन के साथ क्या लेना-देना?”

“ज़रा सोचो,” बिली ने कहा.

“ऊन कहाँ से आता है?” ग्रेग ने सोचा.

“भेड़ से,” वो चिल्लाया.

“मुझे समझ में आया. ऊन, भेड़ के बाल हैं.”

“देखा तुमने,” बिली ने कहा.

सोमवार को ग्रेग स्कूल से वापिस आया.

तब उसके दिमाग में एक विचार आया.

“मैं अन्य बालों को भी देखूँगा,” उसने अपनी माँ से कहा.

फिर उसने अपने सिर से एक बाल खींचा.

“अब मैं देखूँगा कि वो माइक्रोस्कोप में कैसा दिखता है,” उसने कहा.

फिर उसने एक स्लाइड बनाया.

उसने अपने बाल को देखा.

“क्या वो देखने में ऊन जैसा है?” उसकी माँ ने पूछा.

ग्रेग ने माँ की तरफ देखा.

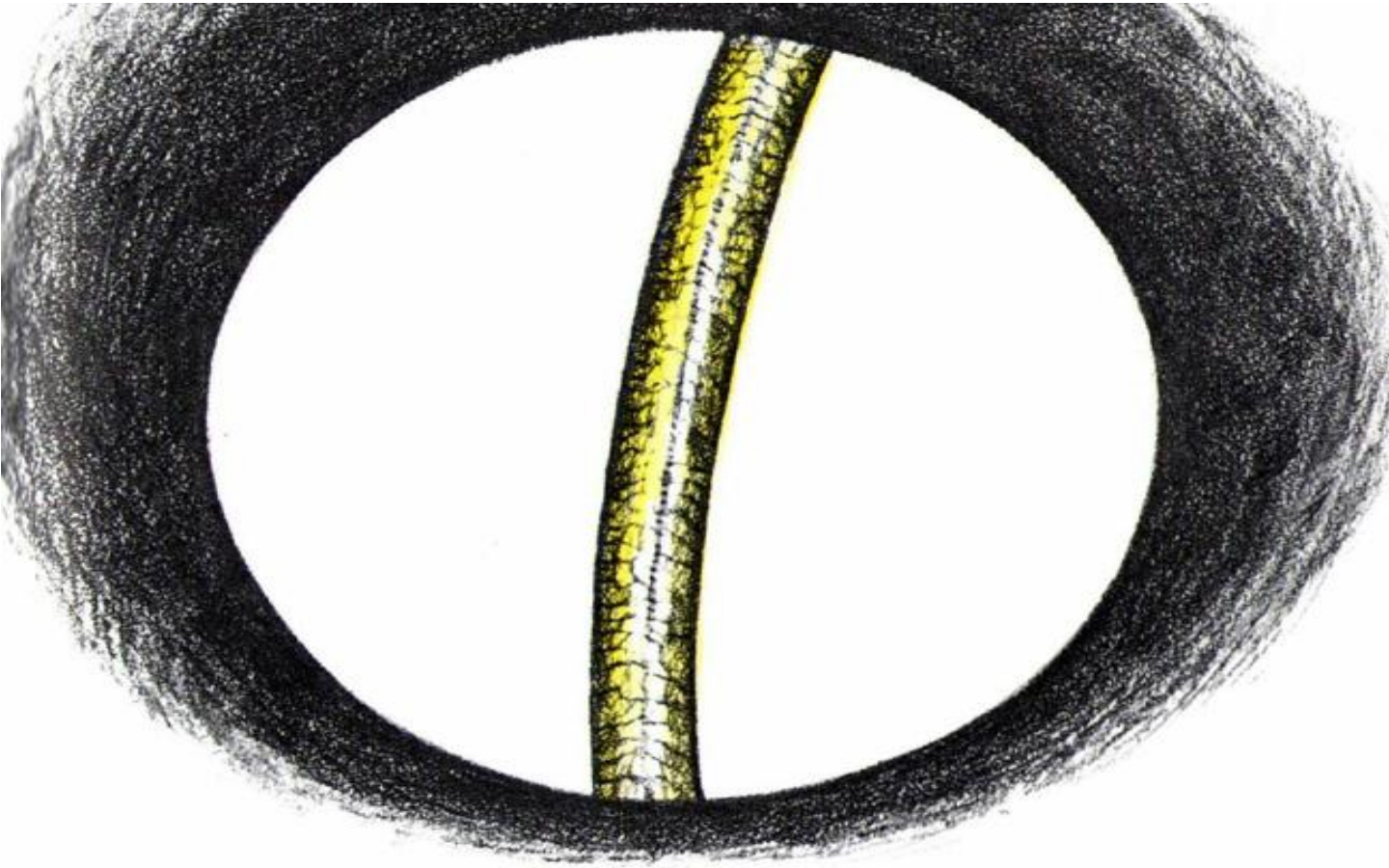

“मैं भेड़ नहीं हूँ,” उसने कहा,

“पर फिर भी मेरे बालों में शल्क (स्केल्स) हैं.

“ग्रेग,” माँ ने कहा.

“देखो भला कुत्ते का बाल कैसा दिखता होगा.”

“माँ,” ग्रेग ने कहा.

“तुम मेरे जितना ही अचरज करती हो.

मुझे कुत्ता कहाँ मिलेगा?”

तभी दरवाज़े की घंटी बजी.

ग्रेग दरवाज़े पर गया.

“क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?” मिसेज ब्रूम ने पूछा.

ग्रेग ने उनके कुत्ते की तरफ देखा.

“ज़रूर, मिसेज ब्रूम, कृपा कर अन्दर आइए,”

ग्रेग ने कहा.

“हेलो, मिसेज ब्रूम,” ग्रेग की माँ ने कहा.

“ग्रेग! देखो कुत्ता! बिल्कुल समय पर आया है.

“क्या हम कोको का एक बाल ले सकते हैं,

मिसेज ब्रूम?

ग्रेग उसे माइक्रोस्कोप में से देखना चाहता है.”

“यह तो एकदम आसान है,” मिसेज ब्रूम ने कहा.

फिर उन्होंने अपने कोट की बाँह की ओर देखा.

“यह लो कुछ बाल,” उन्होंने कहा.

ग्रेग ने बाल लिए.

उसने उन्हें एक स्लाइड पर कुछ पानी के साथ रखा.

उसके ऊपर उसने कवर रखा.

फिर ग्रेग ने स्लाइड को माइक्रोस्कोप के नीचे देखा.

“ज़रा मैं भी देखूं,” माँ ने कहा.

“मैं भी अपने कुत्ते के बाल देखना चाहती हूँ,” मिसेज ब्रूम ने कहा.

“पहले आप देखें,” ग्रेग ने कहा.

“फिर आप.”

पहले मिसेज ब्रूम ने देखा.

फिर माँ ने देखा.

“देखने के बाद यकीन करना मुश्किल होता है,” मिसेज ब्रूम ने कहा.

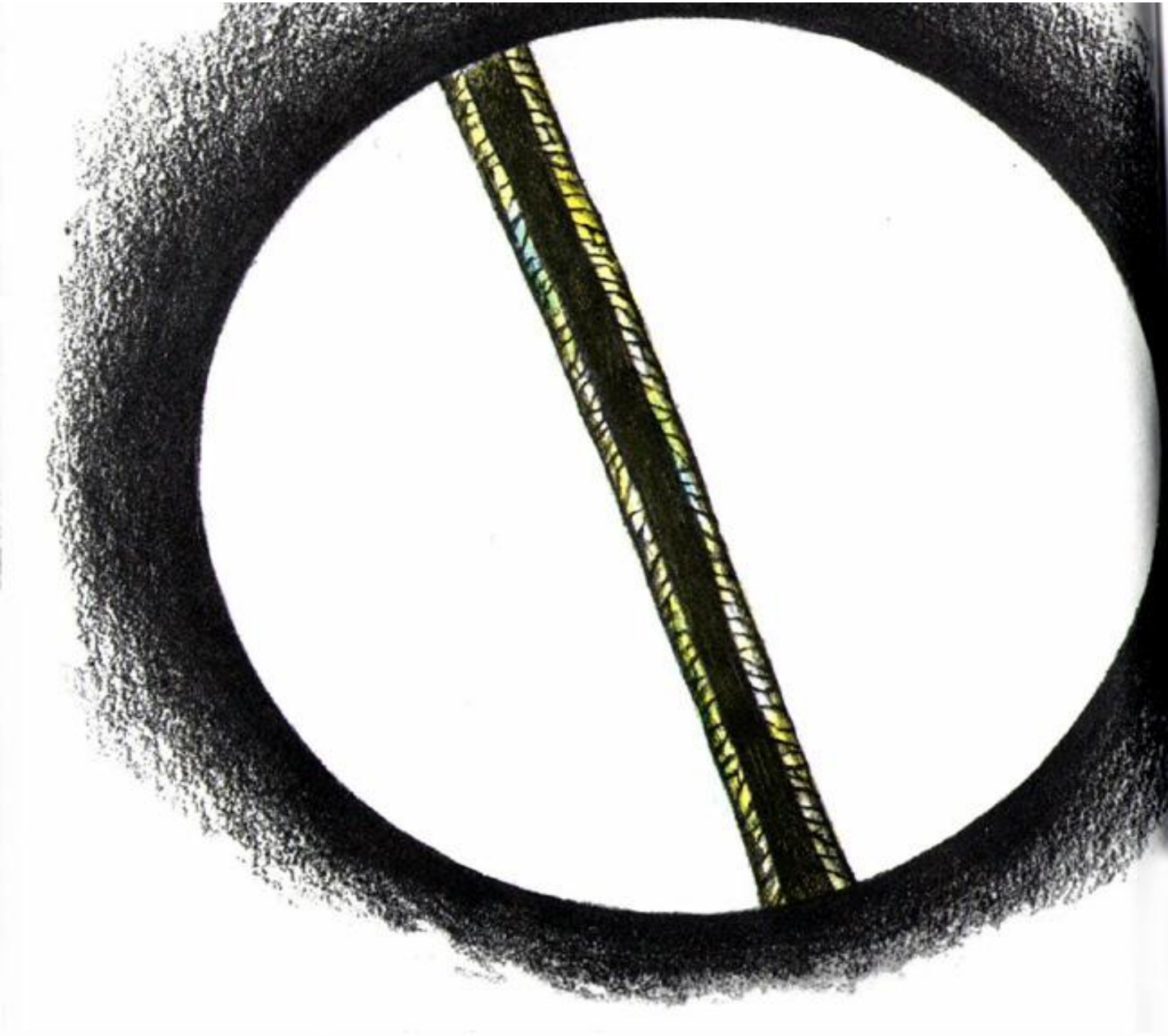

“यह छोटा बाल एक ऊंचे खम्भे जैसा दिखता है.”

ग्रेग ने कोको की तरफ देखा.

“क्या तुम अपने बाल को नहीं देखोगे?” उसने पूछा.

पर कोको ने सिर्फ अपनी पूँछ हिलाई.

एक दिन ग्रेग ने अपनी माँ से कहा,

“मेरी टीचर चाहती हैं कि मैं अपना माइक्रोस्कोप स्कूल लेकर जाऊं.”

“क्या स्कूल में माइक्रोस्कोप नहीं है?” माँ ने पूछा.

“हमारे क्लास में नहीं है,” ग्रेग ने कहा.

“हाँ, पर बहुत संभाल कर लेकर जाना,” माँ ने कहा.

ग्रेग माइक्रोस्कोप को स्कूल लेकर गया.

घर वापिस आकर उसने माँ से कहा.

“माँ, टीचर ने हमें दिखाया कि हरेक जीवित वस्तु सेल्स (कोशिकाओं) की बनी होती है.”

“सेल्स?” ग्रेग की माँ के पूछा.

“हाँ,” ग्रेग ने कहा.

“सभी जीवित प्राणी सेल्स के ही बने होते हैं.”

“अच्छा, फिर मुझे सेल्स दिखाओ,” ग्रेग की माँ ने कहा.

“चलें, एक प्याज़ लेकर आएं,” ग्रेग ने कहा.

उसने प्याज़ की पारदर्शी, पतली झिल्ली छीली.

फिर उससे उसने एक स्लाइड बनाया और उसे देखा.

“देखो,” उसने कहा.

“यह रहे सेल्स (कोशिकाएं).”

ग्रेग की माँ ने देखा.

“यह तो बिल्कुल ईंटों की दीवार जैसी हैं,”

उन्होंने कहा.

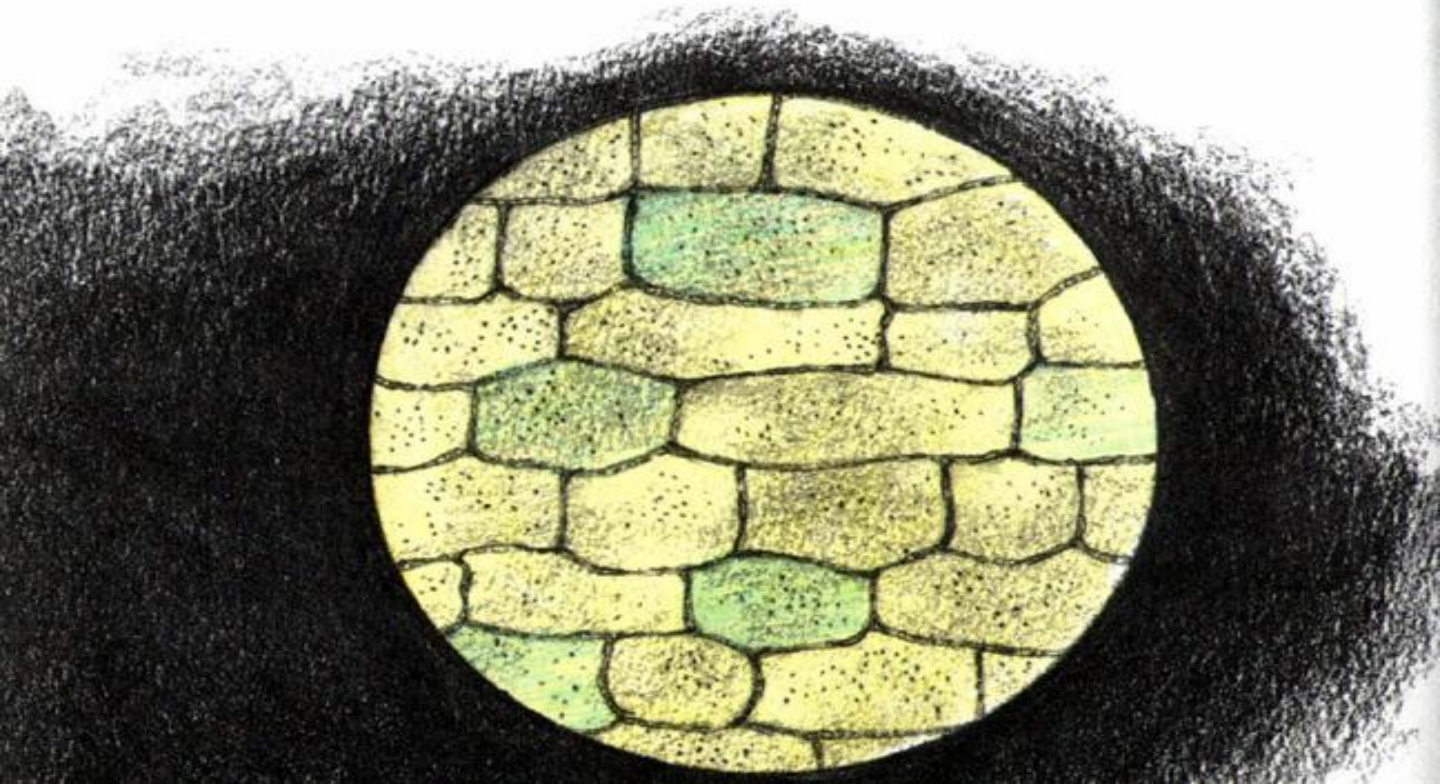

“मैं आपको अपने सेल्स (कोशिकाएं) दिखाता हूँ,” ग्रेग ने कहा.

“खुदको काटना-पीटना नहीं!” माँ ने कहा.

“नहीं मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगा. ज़रा इसे देखें.”

फिर ग्रेग ने एक टूथपिक उठाई और उसे अपने मुंह के अन्दर रगड़ा.

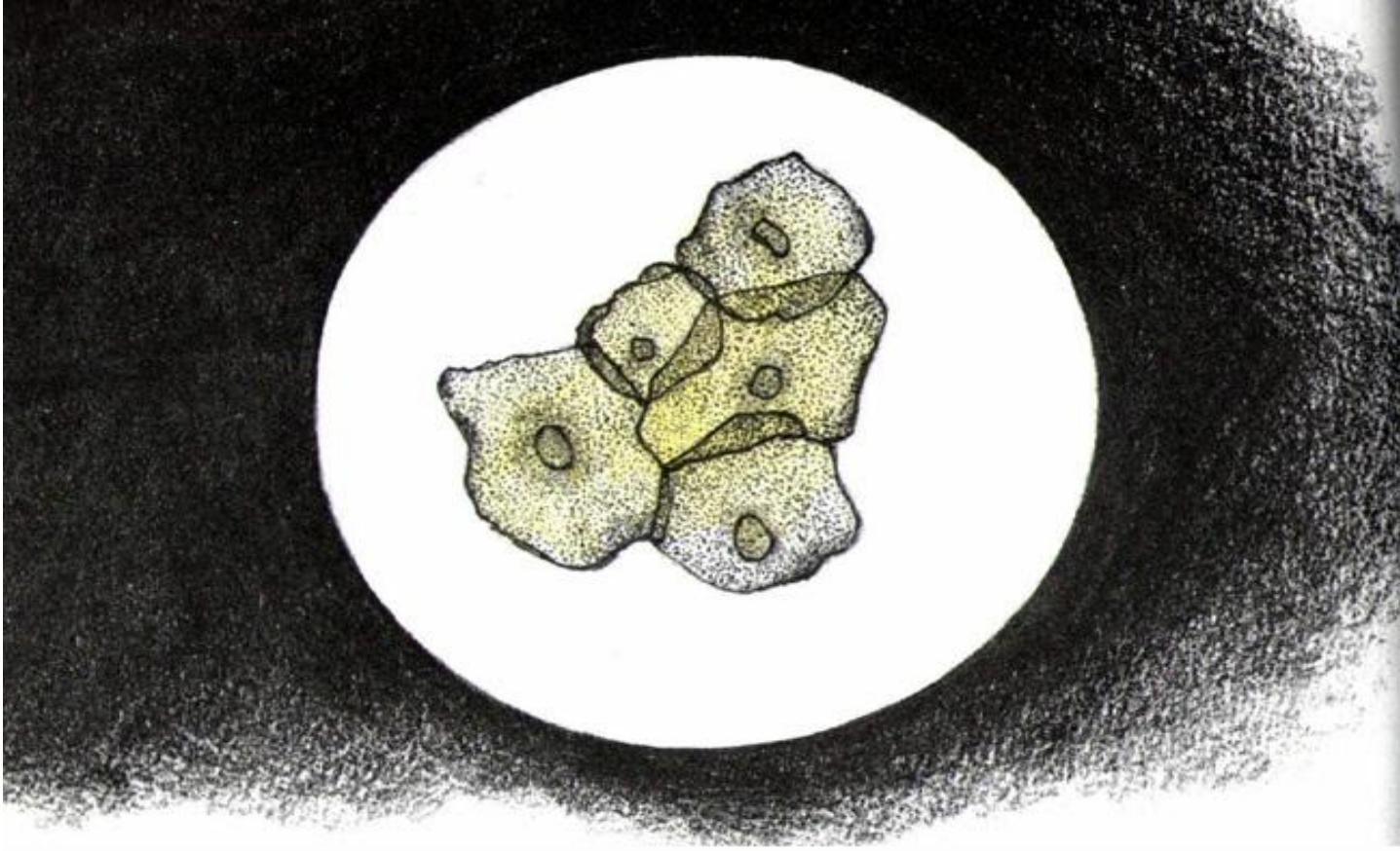

फिर उसने टूथपिक के उस सिरे को

स्लाइड पर एक बूँद पानी में डुबोया.

उसने स्लाइड कवर लगाया.

फिर उसने उसे माइक्रोस्कोप में से देखा.

“देखो, माँ,” उसने कहा.

“यह मेरे खुद के सेल्स (कोशिकाएं) हैं.”

उसकी माँ ने भी उन्हें देखा.

“कितने अच्छे सेल्स हैं,” उन्होंने कहा.

ग्रेग को अब एक नया विचार आया.

“मैं अब मछली-टैंक की पत्तियों को देखूँगा,” उसने कहा.

“शायद मुझे वहां भी कुछ सेल्स (कोशिकाएं) दिखें.”

फिर ग्रेग ने मछली-टैंक की पत्तियों की एक स्लाइड बनाई.

“हरे रंग की ईंटें,” उसने माँ को बुलाया.

फिर उसने स्लाइड हटाकर पत्ती की किनार को देखा.

“यहाँ तो चीज़ें चलती हुई दिख रही हैं,” वो चिल्लाया.

तभी ग्रेग के पिताजी घर वापिस आए.

“डिनर में क्या है?” उन्होंने पूछा.

“मुझे बहुत भूख लगी है.”

ग्रेग की माँ किचन में गईं.

“खाना जल्द ही तैयार हो जाएगा,” उन्होंने कहा.

“देखो, ग्रेग ने माइक्रोस्कोप के नीचे क्या रखा है.”

“आप खुद आकर देखें,” ग्रेग ने कहा.

“यह दुनिया की सबसे व्यस्त जगह है.”

ग्रेग के पिता ने देखा.

“वो सब जीव (प्राणी) हैं,” उन्होंने कहा.

“और हर जीव सिंगल-सेल (एक-कोशिका) का बना है.”

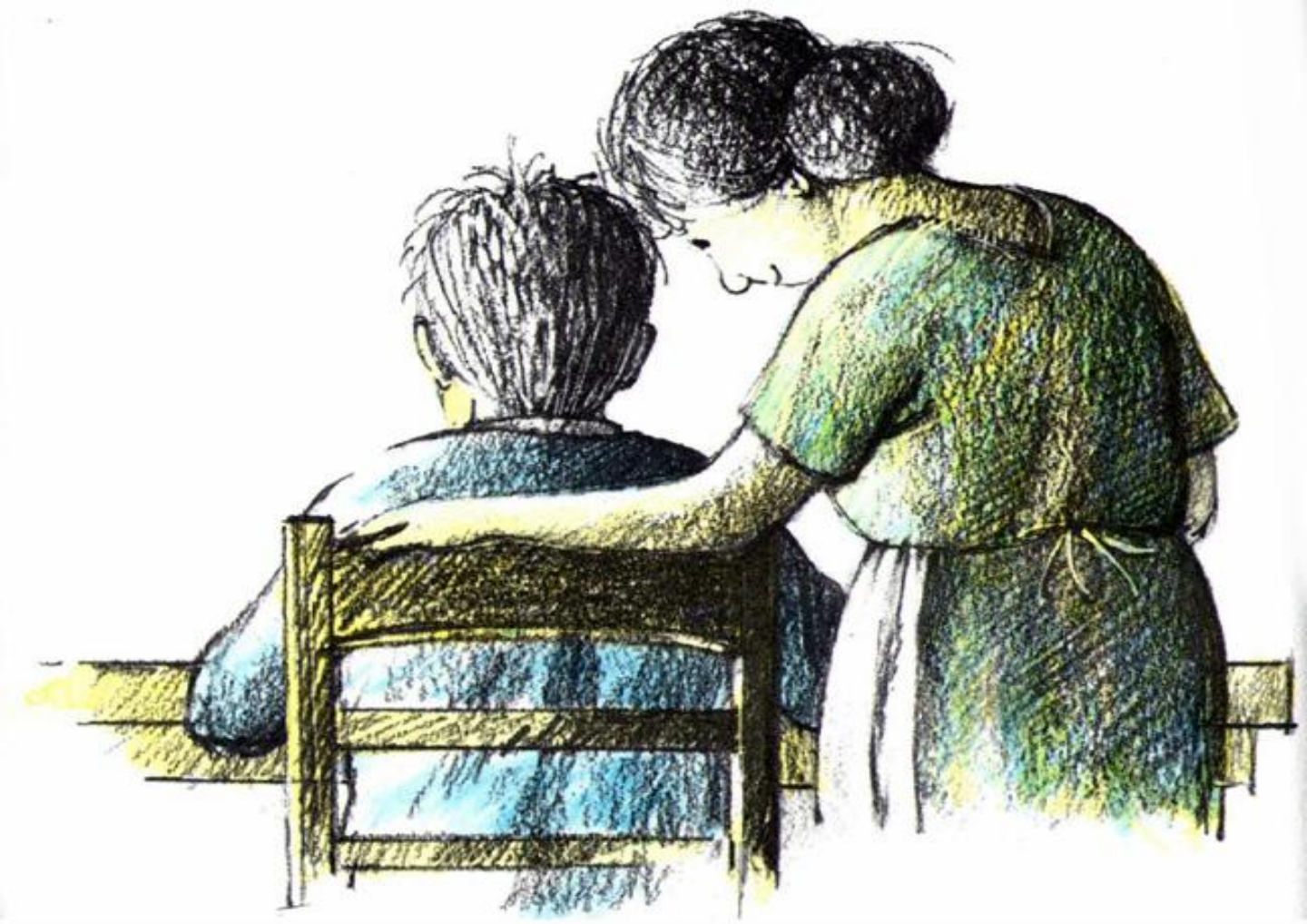

“मैंने अभी-अभी सेल्स (कोशिकाओं) में बारे में सुना था,” ग्रेग ने कहा.

“पर मुझे यह पता नहीं था कि पूरा जीव, एक सिंगल-सेल का बना हो सकता है! एक पत्ते पर उस जैसे कम-से-कम सौ जीव होंगे.”

ग्रेग के पिताजी उन्हें बस देखते ही रहे.

ग्रेग के पिताजी उन्हें बहुत देर तक देखते रहे.

ग्रेग उनका इंतज़ार करता रहा.

इतनी देर में माँ कमरे में आ गईं.

“क्या तुमने यह देखा?” ग्रेग के पिताजी ने पूछा.

फिर माँ ने भी देखा.

ग्रेग इंतज़ार करता रहा.

अंत में ग्रेग ने पिताजी की ओर देखा.

“मैंने आपसे कहा था, कि मुझे एक माइक्रोस्कोप चाहिए. पर मैंने समझने में कुछ गलती की. इस परिवार के लिए हमें, कम-से-कम तीन माइक्रोस्कोप चाहिए.”

An I Can Read Book®

ग्रेग का माइक्रोस्कोप

ग्रेग को एक माइक्रोस्कोप चाहिए था. लम्बे समय से वो उसका इंतज़ार कर रहा था. जब उसे माइक्रोस्कोप मिला तब ग्रेग ने छोटी-छोटी चीज़ों की एक नई दुनिया खोज निकाली. और वो सब चीज़ें उसे घर के अन्दर ही थीं!

ग्रेग माइक्रोस्कोप में से नमक, चीनी, धागे – और बाल देखता है. माँ-बाप भी उसकी इस खोज में शामिल होते हैं. अंत में ग्रेग सोचता है – क्या पूरे परिवार के लिए सिर्फ एक माइक्रोस्कोप से काम चलेगा?